वैष्णव जन तो तेने कहिये ....

वैष्णव जन तो तेने कहिये, जे पीड़ पराई जाणे रे
पर दुःखे उपकार करे तोये, मन अभिमान न आणे रे

सकल लोक मान सहुने वंदे, निंदा न करे केनी रे
वाच, काछ, मन, निश्चल राखे, धन–धन जननी तेनी रे

समदृष्टी ने तृष्णा त्यागी, पर स्त्री जेने मात रे
जिव्हा थकी असत्य न बोले, पर धन नव झाले हाथ रे

मोह माया व्यापे नहिं जेने, दृढ वैराग्य जेना मन मान रे
रामनाम सुन ताली लागी, सकल तीरथ तेना मन मान रे

वण लोभी ने कपट रहित छे, काम क्रोध निवार्या रे
नरसैयों तेनु दरसन करता, कुल एकोतेर तार्‌या रे

वैष्णव जन तो तेने कहिये, जे पीड़ पराई जाणे रे ....

बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलया कोई।
जो मन खोजा आपणा, तो मुझसे बुरा न कोई।।